Chapter बारह

भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश की वंशावली

इस अध्याय में भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश के वंश का वर्णन हुआ है। इस वंश के सदस्य महाराज इक्ष्वाकु के पुत्र शशाद के उत्तराधिकारी (वंशज) हैं।

भगवान् रामचन्द्र के वंश में उनके पुत्र कुश के बाद क्रमश: अतिथि, निषध, नभ, पुण्डरीक, क्षेमधन्वा, देवानीक, अनीह, पारियात्र, बलस्थल, वज्रनाभ, सगण तथा विधृति उत्पन्न हुए। इन महापुरुषों ने सारे जगत पर शासन चलाया। विधृति से हिरण्यनाभ हुआ जो आगे चलकर जैमिनि का शिष्य बना और जिसने योगप्रणाली की स्थापना की जिसमें याज्ञवल्क्य दीक्षित हुए। इस वंश में पुष्प, ध्रुवसन्धि, सुदर्शन, अग्निवर्ण, शीघ्र तथा मरु हुए। मरु ने योगाभ्यास में सिद्धि प्राप्त की थी और वह अब भी कलाप नामक ग्राम में रह रहा है। इस कलियुग के अन्त में वह सूर्यवंश को पुनरुज्जीवित करेगा। इस वंश में आगे चलकर प्रसुश्रुत, सन्धि, अमर्षण, महश्वान, विश्वबाहु, प्रसेनजित, तक्षक तथा बृहद्बल हुए। बृहद्बल को अभिमन्यु ने मारा था। शुकदेव गोस्वामी ने बतलाया कि ये सारे राजा प्रयाण कर चुके थे। बृहद्बल के भावी वंशज होंगे: बृहद्रण, ऊरुक्रिय, वत्सवृद्ध, प्रतिव्योम, भानु, दिवाक, सहदेव, बृहदश्व, भानुमान, प्रतीकाश्व, सुप्रतीक, मरुदेव, सुनक्षत्र, पुष्कर, अन्तरिक्ष, सुतपा, अमित्रजित, बृहद्राज, बर्हि, कृतञ्जय, रणञ्जय, सञ्जय, शाक्य, शुद्धोद, लाङ्गल, प्रसेनजित, क्षुद्रक, रणक, सुरथ तथा सुमित्र। ये सभी एक के बाद एक राजा बनेंगे। इस कलियुग का अन्तिम इक्ष्वाकुवंशी राजा सुमित्र होगा और उसके बाद यह वंश समाप्त हो जायेगा।

श्रीशुक उवाच
कुशस्य चातिथिस्तस्मान्निषधस्तत्सुतो नभ: ।
पुण्डरीकोऽथ तत्पुत्र: क्षेमधन्वाभवत्तत: ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुक: उवाच—शुकदेव गोस्वामी ने कहा; कुशस्य—भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश का; च—भी; अतिथि:—अतिथि; तस्मात्—उससे; निषध:—निषध; तत्-सुत:—उसका पुत्र; नभ:—नभ; पुण्डरीक:—पुण्डरीक; अथ—तत्पश्चात्; तत्-पुत्र:—उसका पुत्र; क्षेमधन्वा—क्षेमधन्वा; अभवत्—हुआ; तत:—तत्पश्चात्।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : रामचन्द्र का पुत्र कुश हुआ, कुश का पुत्र अतिथि था, अतिथि का पुत्र निषध और निषध का पुत्र नभ था। नभ का पुत्र पुण्डरीक हुआ जिसके पुत्र का नाम क्षेमधन्वा

था।

देवानीकस्ततोऽनीहः पारियात्रोऽथ तत्सुतः ।
ततो बलस्थलस्तस्माद्वज्रनाभोऽर्कसम्भवः ॥ २ ॥

शब्दार्थ

देवानीकः—देवानीक; ततः—क्षेमधन्वा से; अनीहः—देवानीक के पुत्र का नाम अनीह था; पारियात्रः—पारियात्र; अथ—तत्पश्चात्; तत्-सुतः—अनीह का पुत्र; ततः—पारियात्र से; बलस्थलः—बलस्थल; तस्मात्—बलस्थल से; वज्रनाभः—वज्रनाभ; अर्क-सम्भवः—सूर्यदेव से उत्पन्न।

क्षेमधन्वा का पुत्र देवानीक था और देवानीक का पुत्र अनीह हुआ जिसके पुत्र का नाम पारियात्र था। पारियात्र का पुत्र बलस्थल था, जिसका पुत्र वज्रनाभ हुआ जो सूर्यदेव के तेज से उत्पन्न बतलाया जाता है।

सगणस्तत्सुतस्तस्माद्विधृतिश्चाभवत्सुतः ।
ततो हिरण्यनाभोऽभूद्योगाचार्यस्तु जैमिनेः ॥ ३ ॥
शिष्यः कौशल्य आध्यात्मं याज्ञवल्क्योऽध्यगाद्यतः ।
योगं महोदयमृषिर्हृदयग्रन्थिभेदकम् ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

सगणः—सगण; तत्—उसका; सुतः—पुत्र; तस्मात्—उससे; विधृतिः—विधृति; च—भी; अभवत्—उत्पन्न हुआ; सुतः—उसका पुत्र; ततः—उससे; हिरण्यनाभः—हिरण्यनाभ; अभूत्—हुआ; योग-आचार्यः—योग दर्शन का संस्थापक; तु—लेकिन; जैमिनेः—जैमिनि को अपना गुरु मानने से; शिष्यः—शिष्य; कौशल्यः—कौशल्य; आध्यात्मम्—आध्यात्मिक; याज्ञवल्क्यः—याज्ञवल्क्य ने; अध्यगात्—अध्ययन किया; यतः—उससे (हिरण्यनाभ से); योगम्—योग की क्रियाएँ; महा-उदयम्—अत्यन्त महान; ऋषिः—याज्ञवल्क्य ऋषि; हृदय-ग्रन्थि-भेदकम्—योग, जो भौतिक अनुरक्ति की हृदय की गाँठ को खोल सकती हैं।

वज्रनाभ का पुत्र सगण हुआ और उसका पुत्र विधृति हुआ। विधृति का पुत्र हिरण्यनाभ था जो जैमिनि का शिष्य और फिर योग का महान् आचार्य बना। इन्हीं हिरण्यनाभ से ऋषि याज्ञवल्क्य ने अध्यात्म योग नामक योग की अत्युच्च प्रणाली सीखी जो हृदय की भौतिक आसक्ति की गाँठ को खोलने में समर्थ है।

पुष्पो हिरण्यनाभस्य ध्रुवसन्धिस्ततोऽभवत् ।
सुदर्शनोऽथाग्निवर्णः शीघ्रस्तस्य मरुः सुतः ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

पुष्पः—पुष्प; हिरण्यनाभस्य—हिरण्यनाभ का पुत्र; ध्रुवसन्धिः—ध्रुवसन्धि; ततः—उससे; अभवत्—उत्पन्न हुआ; सुदर्शनः—सुदर्शन; अथ—तत्पश्चात्; अग्निवर्णः—सुदर्शन का पुत्र अग्निवर्ण; शीघ्रः—शीघ्र; तस्य—उसका; मरुः—मरु; सुतः—पुत्र।

हिरण्यनाभ के पुत्र का नाम पुष्प था जिससे ध्रुवसन्धि नामक पुत्र हुआ। ध्रुवसन्धि का पुत्र सुदर्शन और उसका पुत्र अग्निवर्ण था। अग्निवर्ण के पुत्र का नाम शीघ्र था और उसके पुत्र का नाम मरु था।

सोऽसावास्ते योगसिद्धः कलापग्राममास्थितः ।
कलेरन्ते सूर्यवंशं नष्टं भावयिता पुनः ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

सः—वह; असौ—मरु नामक व्यक्ति; आस्ते—अब भी है; योग-सिद्धः—योगशक्ति में सिद्धिप्राप्त; कलाप-ग्रामम्—कलाप नामक गाँव में; आस्थितः—रह रहा है; कलेः—इस कलियुग के; अन्ते—अन्त में; सूर्य-वंशम्—सूर्यदेव के वंशज; नष्टम्—नष्ट होने पर; भावयिता—पुत्र उत्पन्न करके शुरु करेगा; पुनः—फिर से।

योगशक्ति में सिद्धि प्राप्त करके मरु अब भी कलाप ग्राम नामक गाँव में रह रहा है। वह कलियुग की समाप्ति पर पुत्र उत्पन्न करेगा जिससे विनष्ट सूर्यवंश पुनरुज्जीवित होगा।

तात्पर्य : कम से कम पाँच हजार वर्ष पूर्व श्रील शुकदेव गोस्वामी ने कलाप-ग्राम में मरु के अस्तित्व का निर्धारण किया था और कहा था कि मरु योगसिद्ध शरीर प्राप्त करके कलियुग के अन्त तक रहता रहेगा। इस कलियुग को ४,३२,००० वर्षों तक चलना है। ऐसी होती है योगशक्ति की सिद्धि। श्वास को रोक कर सिद्ध योगी जितने काल तक चाहे जीवित रह सकता है। कभी-कभी हम वैदिक साहित्य से यह सुनते हैं कि व्यासदेव तथा अश्वत्थामा जैसे कुछ वैदिककालीन महापुरुष अब भी जीवित हैं। यहाँ हमें यह पता चलता है कि मरु भी अभी जीवित है। कभी-कभी हमें आश्चर्य होता है कि क्या मर्त्य शरीर इतने दीर्घकाल तक जीवित रह सकता है? इस दीर्घ आयु की व्याख्या यहाँ *योगसिद्ध* शब्द में निहित है। योग विधि में सिद्ध हो जाने पर मनुष्य जितने काल तक जी चाहे जीवित रह सकता है। किन्तु तुच्छ *योगसिद्ध* के प्रदर्शनसिद्धि नहीं कहलाते। यहाँ पर सिद्धि का जीवन्त उदाहरण प्राप्त है—योगसिद्ध इच्छानुसार जितने समय तक चाहे जीवित रह सकता है।

तस्मात्प्रसुश्रुतस्तस्य सन्धिस्तस्याप्यमर्षणः ।
महस्वांस्तत्सुतस्तस्माद्विश्वबाहुरजायत ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

तस्मात्—मरु से; प्रसुश्रुतः—उसका पुत्र प्रसुश्रुत; तस्य—उसका; सन्धिः—सन्धि नामक पुत्र; तस्य—उसका; अपि—भी; अमर्षणः—अमर्षण नामक पुत्र; महस्वान्—महस्वान; तत्—उसका; सुतः—पुत्र; तस्मात्—उससे (महस्वान से); विश्वबाहुः—विश्वबाहु; अजायत—उत्पन्न हुआ।

मरु से प्रसुश्रुत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिससे सन्धि, फिर सन्धि से अमर्षण और अमर्षण से महस्वान नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। महस्वान से विश्वबाहु का जन्म हुआ।

ततः प्रसेनजित्तस्मात्तक्षको भविता पुनः ।
ततो बृहद्बलो यस्तु पित्रा ते समरे हतः ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

ततः—विश्वबाहु से; प्रसेनजित्—प्रसेनजित; तस्मात्—उससे; तक्षकः—तक्षक; भविता—जन्म लिया; पुनः—फिर; ततः—उससे; बृहद्बलः—बृहद्बल; यः—जो; तु—लेकिन; पित्रा—पिता के द्वारा; ते—तुम्हारे; समरे—युद्ध में; हतः—मारा गया।

विश्वबाहु से प्रसेनजित नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिससे तक्षक और तक्षक से बृहद्बल हुआ जो तुम्हारे पिता द्वारा युद्ध में मारा गया।

एते हीक्ष्वाकुभूपाला अतीताः शृण्वनागतान् ।
बृहद्बलस्य भविता पुत्रो नाम्ना बृहद्रणः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

एते—ये सभी; हि—निस्सन्देह; इक्ष्वाकु-भूपालाः—इक्ष्वाकु वंश के राजा; अतीताः—हो चुके हैं; शृणु—सुनो; अनागतान्—जो भविष्य में होंगे; बृहद्बलस्य—बृहद्बल का; भविता—होगा; पुत्रः—पुत्र; नाम्ना—नामक; बृहद्रणः—बृहद्रण।

ये सारे राजा इक्ष्वाकु वंश में हो चुके हैं। अब उन राजाओं के नाम सुनो जो भविष्य में होंगे। बृहद्बल से बृहद्रण का जन्म होगा।

ऊरुक्रियः सुतस्तस्य वत्सवृद्धो भविष्यति ।
प्रतिव्योमस्ततो भानुर्दिवाको वाहिनीपतिः ॥ १० ॥

शब्दार्थ

ऊरुक्रियः—ऊरुक्रिय; सुतः—पुत्र; तस्य—उसका; वत्सवृद्धः—वत्सवृद्ध; भविष्यति—होगा; प्रतिव्योमः—प्रतिव्योम; ततः—उससे; भानुः—भानु; दिवाकः—भानु से दिवाक; वाहिनी-पतिः—सेनापति।

बृहद्रण का पुत्र ऊरुक्रिय होगा जिसके वत्सवृद्ध नामक पुत्र उत्पन्न होगा। वत्सवृद्ध के पुत्र का नाम प्रतिव्योम और उसके पुत्र का नाम भानु होगा जिससे महान् सेनापति दिवाक नाम का पुत्र जन्म लेगा।

सहदेवस्ततो वीरो बृहदश्वोऽथ भानुमान् ।
प्रतीकाश्वो भानुमतः सुप्रतीकोऽथ तत्सुतः ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

सहदेवः—सहदेव; ततः—दिवाक से; वीरः—वीर पुरुष; बृहदश्वः—बृहदश्व; अथ—उससे; भानुमान्—भानुमान; प्रतीकाश्वः—प्रतीकाश्व; भानुमतः—भानुमान से; सुप्रतीकः—सुप्रतीक; अथ—तत्पश्चात्; तत्-सुतः—प्रतीकाश्व का पुत्र।

तत्पश्चात् दिवाक का पुत्र सहदेव होगा और उसका पुत्र महान् वीर बृहदाश्व होगा। बृहदाश्व से भानुमान होगा जिससे प्रतीकाश्व नाम का पुत्र होगा। प्रतीकाश्व का पुत्र सुप्रतीक होगा।

भविता मरुदेवोऽथ सुनक्षत्रोऽथ पुष्करः ।
तस्यान्तरिक्षस्तत्पुत्रः सुतपास्तदमित्रजित् ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

भविता—उत्पन्न होगा; मरुदेवः—मरुदेव; अथ—तत्पश्चात्; सुनक्षत्रः—सुनक्षत्र; अथ—तत्पश्चात्; पुष्करः—पुष्कर; तस्य—पुष्कर का; अन्तरिक्षः—अन्तरिक्ष; तत्-पुत्रः—उसका पुत्र; सुतपाः—सुतपा; तत्—उससे; अमित्रजित्—अमित्रजित।

तत्पश्चात् सुप्रतीक से मरुदेव, मरुदेव से सुनक्षत्र, सुनक्षत्र से पुष्कर और पुष्कर से अन्तरिक्ष होगा जिसका पुत्र सुतपा होगा। सुतपा का पुत्र अमित्रजित होगा।

बृहद्राजस्तु तस्यापि बर्हिस्तस्मात्कृतञ्जयः ।
रणञ्जयस्तस्य सुतः सञ्जयो भविता ततः ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

बृहद्राजः—बृहद्राज; तु—लेकिन; तस्य अपि—अमित्रजित का; बर्हिः—बर्हि; तस्मात्—बर्हि से; कृतञ्जयः—कृतञ्जय; रणञ्जयः—रणञ्जय; तस्य—कृतञ्जय का; सुतः—पुत्र; सञ्जयः—सञ्जय; भविता—होगा; ततः—रणञ्जय से।

अमित्रजित से बृहद्राज होगा, बृहद्राज से बर्हि, बर्हि से कृतञ्जय, कृतञ्जय से रणञ्जय और रणञ्जय से सञ्जय नामक पुत्र उत्पन्न होगा।

तस्माच्छाक्योऽथ शुद्धोदो लाङ्गलस्तत्सुतः स्मृतः ।
ततः प्रसेनजित्तस्मात्क्षुद्रको भविता ततः ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

तस्मात्—सञ्जय से; शाक्यः—शाक्य; अथ—तत्पश्चात्; शुद्धोदः—शुद्धोद; लाङ्गलः—लांगल; तत्-सुतः—शुद्धोद का पुत्र; स्मृतः—सुप्रसिद्ध; ततः—उससे; प्रसेनजित्—प्रसेनजित; तस्मात्—उससे; क्षुद्रकः—क्षुद्रक; भविता—जन्म लेगा; ततः—तत्पश्चात्।

सञ्जय से शाक्य, शाक्य से शुद्धोद, शुद्धोद से लांगल और लांगल से प्रसेनजित तथा प्रसेनजित से क्षुद्रक उत्पन्न होगा।

रणको भविता तस्मात्सुरथस्तनयस्ततः ।
सुमित्रो नाम निष्ठान्त एते बार्हद्बलान्वयाः ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

रणकः—रणक; भविता—होगा; तस्मात्—क्षुद्रक से; सुरथः—सुरथ; तनयः—पुत्र; ततः—तत्पश्चात्; सुमित्रः—सुमित्र; नाम—नामक; निष्ठ-अन्तः—वंश के अन्त में; एते—उपर्युक्त सारे राजा; बार्हद्बल-अन्वयाः—राजा बृहद्बल के वंश में।

क्षुद्रक का पुत्र रणक, रणक का सुरथ, सुरथ का पुत्र सुमित्र होगा और इस तरह वंश का अन्त हो जायेगा। यह बृहद्बल के वंश का वर्णन है।

इक्ष्वाकूणामयं वंशः सुमित्रान्तो भविष्यति ।
यतस्तं प्राप्य राजानं संस्थां प्राप्स्यति वै कलौ ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

इक्ष्वाकूणाम्—राजा इक्ष्वाकु के वंश का; अयम्—यह; वंशः—वंशज; सुमित्र-अन्तः—सुमित्र इस वंश के अन्तिम राजा के रूप में; भविष्यति—होगा, कलियुग में ही; यतः—क्योंकि; तम्—उसको; प्राप्य—पाकर; राजानम्—उस वंश के राजा के रूप में; संस्थाम्—अन्त; प्राप्स्यति—प्राप्त होगा; वै—निस्सन्देह; कलौ—कलियुग के अन्त में।

इक्ष्वाकु वंश का अन्तिम राजा सुमित्र होगा; उसके बाद सूर्यदेव के वंश में और कोई पुत्र न होगा और इस वंश का अन्त हो जायेगा।

इस प्रकार *श्रीमद्भागवत* के नवम स्कन्ध के अन्तर्गत ''भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश की वंशावली'' नामक बारहवें अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।